# संकल्प

HINDI LITERACY TEAM
CHANDIGARH

मैं हूँ
प्रेरक

आज प्रेरक घर लौटते हुए रास्ते में प्रेरणा दीदी से बोला, “आपने कहा था कि आप रोज़ कुछ नया बताएँगी।”

प्रेरणा बोली, “आज मैं आपको कुछ ऐसी कविताएँ बताऊँगी/सुनाऊँगी जिन्हें सुनकर हँसी फूट पड़ेगी।”

और मैं
हूँ प्रेरणा

अरे वाह दीदी!
फिर तो बहुत
मजा आएगा।

हाँ प्रेरक, आज
मैं तुम्हें परीक्षा
से सम्बन्धित
कुछ हास्य
कविताएँ
बताऊँगी।

# परीक्षा सम्बन्धी हास्य कविताएँ

## पप्पू का फिर एग्जाम

सुबह से शाम तक पप्पू
जप रहा भगवान का नाम।
खा रहा बार-बार बादाम,
लगा रहा झंडू बाम।।
घरवाले समझ गये कि
आ गया है एग्जाम।
आ गया है एग्जाम अतः
पप्पू का सिर है जाम।।
पिछली बार जाम हो गए थे
याद करने वाले उत्तर।
याद हो जाते यदि होते
फिल्मों के गीत-से सुन्दर।।

आयी परीक्षा सिर पर देखो
मुँह से निकला हाय राम,
बने किताबी कीड़ा हैं सब
छोड़ के देखो सारे काम।
रिश्तेदारों को है चिंता
हमसे ज्यादा खाय रही
फेल हुई थी चुन्नी अपनी
बता के बुआ डराय रही,
बस उनके चक्कर में अब तो
जीना अपना हुआ हराम
बने किताबी कीड़ा हैं सब
छोड़ के देखो सारे काम।

बने किताबी
कीड़ा हैं सब,
छोड़ के देखो
सारे काम।

नींद न आती रातों को
उल्लू बन-बन जाग रहे
समझ न आये कौन दिशा में
दिमाग के घोड़े भाग रहे,
सिर में ऐसी दर्द छिड़े है
भगा सके न झंडू बाम
बने किताबी कीड़ा हैं सब
छोड़ के देखो सारे काम।
दीदी! कितनी मजेदार कविता है

जबसे हमारी परीक्षा का
समय निकट में आया है
पढ़ना-लिखना छोड़ के हमने
बाकी सब अजमाया है।

लगा रहे हैं तरकीब कि
परीक्षक से कोई पहचान निकल जाए,
परीक्षा में आने वाले अंक
फिर शायद ही कुछ संभल जाएँ,
इसी चक्कर में हमने शाम को
मंत्री जी को खाने पर बुलाया है
पढ़ना-लिखना छोड़ के हमने
बाकी सब अजमाया है।

मज़ेदार
लेकिन कहीं यही
तरकीब कक्षा के
बच्चे ना अपनाने
लगें

मंदिर भी हो आये हम और
मस्जिद भी होकर आये हैं
आशीर्वाद भी सबका
हम थोक में लेकर आये हैं
लगा लिया है तिलक हमने
ताबीज भी बंधवाया है
पढ़ना-लिखना छोड़ के हमने
बाकी सब अजमाया है।

पढ़ना-लिखना
छोड़ के हमने
बाकी सब
अजमाया है।

मंदिर,गुरूद्वारे हो आये हम
मस्जिद भी होकर आये हैं
आशीर्वाद भी सबका
हम थोक में लेकर आये हैं
लगा लिया है तिलक हमने
ताबीज भी बंधवाया है
पढ़ना-लिखना छोड़ के हमने
बाकी सब अजमाया है।

दीदी! पढ़ने लिखने से
ही परीक्षा में सफलता
मिलेगी

यदि परीक्षा न होती तो
कौन श्रेष्ठ फिर कहलाता
सूझ बूझ होती किसमें फिर
कौन ऊँचाई को पाता,
यदि परीक्षा ना होती तो...

खुश होते बच्चे लेकिन
पढ़ना लिखना न सिख पाते
मेहनत करते कितनी फिर भी
अपनी किस्मत न लिख पाते,
वक़्त ये फिर उनको निश्चित
असली आइना दिखा जाता
यदि परीक्षा ना होती तो...

बहुत खूब दीदी!
ये हुई न बात

कैसे देश तरक्की करता
हर दम ये पिछड़ता जाता
न होते विद्वान यहाँ
न ज्ञानी कोई कहलाता,
ऐसे में कौन बताओ फिर
सच्चाई का साथ निभाता
यदि परीक्षा ना होती तो...
न होता उद्देश्य कोई
न कुछ पाने की चाहत होती
दूर कहीं किसी कोने में
होकर खड़ी विद्या रोती,
संघर्ष से होता सुन्दर जीवन
कौन हमें यह सिखलाता
यदि परीक्षा ना होती तो...

परीक्षा का तो
उद्देश्य ही
निराला है दीदी

# चलो जवाब दो:

1. इस अंक का मुख्य विषय क्या है?

क) कविता　　ख) परीक्षा

ग) हास्य कविता　　घ) संकल्प

2. मंत्री जी को शाम को खाने पर बुलाया है,कौन सा दोनों विकल्प सही है

क) ताकि मंत्री नौकरी लगवा दे　　ख) ताकि परीक्षा में आने वाले अंक संभल जाएँ

ग) ताकि परीक्षक से कोई पहचान निकल जाए　　घ) ताकि मंत्री को दोपहर को खाने पर ना बुलाना पड़े

i क,ख

ii ख,ग

Iii क,ग

iv ख,घ

3. पढ़ना-लिखना छोड़ के यह कहना “मंदिर-गुरूद्वारे हो आये हम, मस्जिद भी होकर आये हैं”,पर अपने तर्कसंगत उत्तर दें

4. यदि परीक्षा ना होती तो क्या होता?

5. राज्य बोर्ड की ओर से आयोजित की गई अंक सुधार परीक्षा में हाईस्कूल में 33876 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसमें कुल 30744 विद्यार्थियों को सफलता मिली। कुल कितने प्रतिशत विद्यार्थी सफल हुए?

# उत्तरमाला

1. ख) परीक्षा

2. ii ख,ग

3.परीक्षा में सफलता हेतु (परिश्रम) पढ़ना लिखना अति आवश्यक है,अन्य तर्क संगत भी मान्य

4. श्रेष्ठता का निर्धारण ना हो पाता, प्रतिभाशाली बच्चों को प्रतिभा प्रदर्शन का अवसर ना मिलता

5.90.75%

संकल्प पत्रिका का यह अंक कक्षा सातवीं की पाठ्य-पुस्तक 'वसंत' भाग-2 के पाठ 'कंचा' से प्रेरित है। यह सीखने के विभिन्न प्रतिफल जैसे स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच, अनुमान और कल्पना को पूर्ण करता है।